06

लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

सीखने के परिणाम:-

- विद्यार्थी आपातकाल के पूर्व की परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी छात्र आंदोलन के महत्व से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी आपातकाल लागू होने के पश्चात् की घटनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- आपातकाल के नकारात्मक प्रभावों को विद्यार्थी समझ सकेंगे।
- विद्यार्थी आपातकाल से मिले संदेशों से सीख प्राप्त करेंगे।
- विद्यार्थी भारतीय लोकतंत्र की ताकत को समझ सकेंगे।
- 1967 के बाद भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी के वर्चस्व में काफी वृद्धि हुई। इस दौर में इंदिरा गांधी की लोकप्रियता चरम पर थी।

1967 के बाद भारतीय राजनीति की परिस्थितियाँ

- इस दौर में दलगत प्रतिस्पर्धा तीखी और ध्रुवीकृत हो चुकी थी।
- सरकार और न्यायपालिका में तनाव उत्पन्न हो रहे थे।
- विपक्षी दलों का मानना था कि सरकार सरकारी प्राधिकार को निजी प्राधिकार मानकर चल रही है और राजनीति हद से ज्यादा व्यक्तिगत हो गई है।
- 1971 के चुनाव में कांग्रेस ने गरीबी हटाओ का नारा दिया था।
- 1971में बांग्लादेश का संकट उत्पन्न हुआ।
- पूर्वी पाकिस्तान से 80 लाख लोग भारत में पलायन किए।
- 1971 में भारत को पाकिस्तान से युद्ध भी लड़ना पड़ा।

© JCERT not to be republished

1970 के दशक के पूर्वार्ध में भारत की आर्थिक परिस्थितियाँ

- अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल के मूल्य में भारी वृद्धि दर्ज की गई।
- जरूरत की चीजों के दाम में 1973-74 में 23% से 30% तक की वृद्धि हुई।
- भारत में इस दौर में औद्योगिक विकास की दर बहुत कम हो गई।
- बेरोजगारी में इस दौर में भारी वृद्धि हो रही थी।
- खर्च को कम करने के लिए सरकार ने कर्मचारियों के वेतन को रोक लिया।
- 1972 -73 में मानसून के असफल रहने से खाद्यान्न के उत्पादन में 8% की कमी आई।
- कहा जा सकता है कि भारत में इस दौर में आर्थिक बदहाली की स्थिति थी।

इन परिस्थितियों में गैर कांग्रेसी दलों ने बड़े जोरदार तरीके से जन विरोध प्रदर्शित करना शुरू किया।

© JCERT not to be republished

विरोधी दलों और छात्र संगठनों द्वारा विरोध

- गुजरात और बिहार में छात्र -आंदोलन कांग्रेस की सरकार के विरुद्ध शुरू हो गए।
- देश की विपक्षी पार्टियों ने छात्र आंदोलन का समर्थन किया।
- बिगड़ती परिस्थितियों को देखकर गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया।
- कांग्रेस(ओ) के प्रमुख नेता मोरारजी देसाई ने गुजरात में फिर से विधानसभा चुनाव कराने का जबरदस्त दबाव बनाया।
- आन्दोलन के दबाव में सरकार ने विधानसभा चुनाव गुजरात में कराए। इस चुनाव में कांग्रेस हार गई।
- इस दौर में बिहार में भी व्यापक छात्र आंदोलन हुए।
- जयप्रकाश नारायण बिहार के छात्र आंदोलन से जुड़ गए और इस आंदोलन को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।
- जयप्रकाश नारायण ने सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में संपूर्ण क्रांति का नारा दिया।

- इस दौर में रेलवे के कर्मचारियों ने भी एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।
- 1975 में जयप्रकाश नारायण ने जनता के संसद - मार्च का नेतृत्व किया।
- देश की राजधानी में अब तक की सबसे बड़ी रैली थी।

इस दौर में भारतीय जनसंघ, कांग्रेस (ओ), भारतीय लोक दल, सोशलिस्ट पार्टी जैसे गैर - कांग्रेसी दलों ने जयप्रकाश नारायण का समर्थन किया। इन विपक्षी दलों ने जयप्रकाश नारायण को इंदिरा गांधी के विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।

न्यायपालिका और सरकार के बीच संघर्ष

- मौलिक अधिकारों में संशोधन से संबंधित मुद्दे
- संसद द्वारा संविधान में संशोधन करके संपत्ति के अधिकार में काट छांट का मुद्दा
- इन विवादों का समाधान केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य के प्रसिद्ध मुकदमे के रूप में प्रस्तुत हुआ ।
- इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि संविधान का एक बुनियादी ढांचा है और संसद इन आधारभूत विशेषताओं में संशोधन नहीं कर सकती है।
- केशवानंद भारती के फैसले के पश्चात भारत में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का पद रिक्त हुआ।
- 1973 में सरकार ने वरिष्ठ न्यायाधीशों की अनदेखी करके न्यायमूर्ति ए.एन. रे को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया। वरिष्ठ न्यायाधीशों ने इसके विरुद्ध फैसला सुनाया।
- न्यायपालिका और सरकार के बीच संघर्ष की चरम स्थिति तब उत्पन्न हुई, जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जगमोहन लाल सिन्हा ने इंदिरा गांधी के निर्वाचन को अवैध घोषित कर दिया।
- यह फैसला एक समाजवादी नेता राजनारायण द्वारा दायर एक चुनाव याचिका के मामले में सुनाया गया था।

आपातकाल की घोषणा

- जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में विपक्षी दलों ने इंदिरा गांधी के इस्तीफे के लिए दबाव डाला।
- इन दलों ने 25 जून 1975 को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल प्रदर्शन किया।
- जयप्रकाश नारायण ने राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह की घोषणा की।
- जयप्रकाश नारायण ने सेना, पुलिस और सरकारी कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे सरकार के अनैतिक और असंवैधानिक आदेशों का पालन न करें।
- इन परिस्थितियों में 25 जून 1975 को सरकार ने घोषणा की कि देश में आंतरिक गड़बड़ी की आशंका है और अनुच्छेद 352के तहत राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा कर दी गई।
- आपातकाल लागू होने के पश्चात शक्तियों के बँटवारे का संघीय ढांचा निष्प्रभावी हो जाता है और सारी शक्तियां केंद्र सरकार के हाथों में केंद्रित हो जाती हैं।
- 25 जून 1975 को राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद द्वारा आपातकाल की घोषणा करने के पश्चात आधी रात के बाद सभी बड़े अखबारों के दफ्तर की बिजली काट दी गई ।

© JCERT not to be republished

आपातकाल लागू होने के पश्चात् की गतिविधियाँ

- जयप्रकाश नारायण सहित सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- सामाजिक और सांप्रदायिक माहौल बिगड़ने की आशंका के आधार पर सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबंध लगा दिया।
- नागरिकों के मौलिक अधिकार निष्प्रभावी हो गए।
- निवारक निरोध का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करते हुए कई लोगों को गिरफ्तार किया जाने लगा।
- इस कानून के तहत लोगों को इसलिए गिरफ्तार नहीं किया गया की उन्होंने कोई अपराध किया है, बल्कि इसलिए गिरफ्तार किया गया कि, वह कोई अपराध कर सकते हैं।
- इंडियन एक्सप्रेस और स्टेट्समैन जैसे अखबारों ने प्रेस पर लगी सेंसरशिप का विरोध किया।
- पद्मभूषण से सम्मानित कन्नड़ लेखक शिवराम कारंत और पद्मश्री से सम्मानित हिंदी साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु ने लोकतंत्र के दमन के विरोध में अपनी-अपनी पदवी लौटा दी।
- 42वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 के द्वारा यह प्रावधान किया गया कि लोकसभा का कार्यकाल 5 साल की जगह 6 साल होगा।

क्या आपातकाल की आवश्यकता थी?

- सरकार की दृष्टि में लगातार गैर-संसदीय राजनीति का सहारा लेने से व्यवस्था के समक्ष अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना थी।
- सरकार की दृष्टि में बार-बार विरोध प्रदर्शनों एवं हड़तालों से विकास की गति बाधित हो रही थी।
- इंदिरा गांधी का मानना था कि गैर -संवैधानिक साधनों के सहारे विपक्षी शक्तियां उन्हें सत्ता से बेदखल करना चाहती थीं।
- सरकार का दावा था कि विपक्षी नेतृत्वकर्ता पुलिस, सेना एवं कर्मचारियों को विद्रोह के लिए भड़का रहे हैं।
- सी.पी.आई. ने कांग्रेस को आपातकाल पर समर्थन दिया। उनका विश्वास था कि भारत की एकता के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय साजिश की जा रही है।

आपातकाल के विरुद्ध आलोचकों का तर्क

- भारत में जन - आंदोलनों की एक लंबी परंपरा रही है।
- विपक्षी दलों का मानना था कि सरकार के विरुद्ध सार्वजनिक तौर पर प्रदर्शन करना इनका लोकतांत्रिक अधिकार है।
- जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया उन पर कभी भी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल रहने का मुकदमा नहीं चलाया गया।
- गृह मंत्रालय के द्वारा कानून व्यवस्था के लिए कोई गंभीर चिंता नहीं व्यक्त की गई थी।
- बाद में सी. पो. आई. ने भी स्वीकार किया कि आपातकाल पर सरकार का समर्थन करना उचित नहीं था।

© JCERT not to be republished

- आलोचकों की दृष्टि में खतरा देश की एकता और अखंडता को नहीं बल्कि सरकार और प्रधानमंत्री की शक्ति को था।
- आलोचक मानते हैं कि लोकतांत्रिक प्रणाली को प्रतिबंधित करके आपातकाल -जैसे कठोर कदम उठाने की जरूरत बिल्कुल नहीं थी।
- 1977 में गठित जे. सी. शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि आपातकाल के दौरान शक्तियों के दुरूपयोग किए गए।

आपातकाल का क्रियान्वयन

- आपातकाल के दौरान सरकार ने गरीबों के हित के लिए 20 -सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की।
- आपातकाल लागू होने के पश्चात आरंभिक महीनों में मध्यवर्ग इस बात से खुश था कि विरोध आंदोलन समाप्त हो गया और सरकारी कर्मचारियों पर अनुशासन लागू हुआ।
- आम जनता को यह उम्मीद थी कि सरकार जिन निर्धन कल्याण कार्यक्रमों को लागू करने के वायदे कर रही थी उन्हें अब प्रभावी तरीके से लागू किया जाएगा।
- आलोचकों की दृष्टि में सरकार के ज्यादातर वायदे पूरे नहीं हुए।
- सरकार ने निवारक निरोध कानून के तहत कुल 676 नेताओं की गिरफ्तारी की।
- शाह आयोग के अनुसार निवारक निरोध कानून के तहत लगभग एक लाख ग्यारह हजार लोगों को गिरफ्तार किया गया।
- अखबारों की बिजली आपूर्ति काट दी गई। हालांकि दो-तीन दिनों के पश्चात बिजली आपूर्ति फिर बहाल कर दी गई।
- अखबारों पर सेंसरशिप लगा दिए गए।
- आपातकाल के दौरान पुलिस हिरासत में मौत और यातना की घटनाएं भी घटी।
- गरीब लोगों के झुग्गियों को एक जगह से उजाड़ कर दूसरी जगह बसाने की घटनाएं हुईं।
- जनसंख्या नियंत्रण के क्रम में कई लोगों को अनिवार्य रूप से नसबंदी के लिए मजबूर किया गया।

आपातकाल से क्या संदेश मिले?

- भारत में लोकतंत्र की जड़ें काफी मजबूत हैं।
- आपातकालीन संवैधानिक प्रावधानों में सुधार करते हुए आंतरिक अशांति की जगह सशस्त्र विद्रोह शब्द को जोड़ा गया।
- संविधान में यह प्रावधान किया गया कि आपातकाल की घोषणा की सलाह मंत्रीमंडल राष्ट्रपति को लिखित रूप में दें।
- आपातकाल के पश्चात नागरिक अधिकारों के प्रति लोग ज्यादा सचेत हुए। न्यायपालिका भी नागरिक अधिकारों के प्रति तत्पर हुई।
- आपातकाल के पश्चात नागरिक अधिकारों से संबंधित कई संगठन अस्तित्व में आए।

© JCERT not to be republished

आपातकाल के बाद की राजनीतिक स्थिति

- मार्च 1977 में लोकसभा के चुनाव हुए।
- जनवरी 1977 में चुनाव की घोषणा के पश्चात् विपक्षी दल के नेताओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को रिहा कर दिया गया।
- विपक्षी पार्टियों ने आपस में एकता स्थापित कर चुनाव लड़े।
- विपक्षी दलों ने चुनाव में आपातकाल को मुद्दा बनाया ।
- विपक्षी दलों ने जनता पार्टी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा।
- जगजीवन राम ने **कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी** नाम की नई पार्टी बनाई। बाद में यह पार्टी जनता पार्टी में शामिल हो गई।
- आजादी के बाद पहली बार कांग्रेस लोकसभा का चुनाव हार गई। कांग्रेस को इस चुनाव में मात्र 134 सीटों पर विजय मिली।
- जनता पार्टी और उसके समर्थक दलों को लोकसभा में कुल 330 सीटें मिलीं।
- कांग्रेस को बिहार उत्तर प्रदेश दिल्ली हरियाणा और पंजाब में एक भी सीट नहीं मिली।
- इंदिरा गांधी रायबरेली से चुनाव हार गई ।

© JCERT not to be republished

जनता सरकार की उपलब्धियाँ

- सरकार में तालमेल का अभाव था।
- जनता पार्टी की सरकार के पास दिशा नेतृत्व अथवा किसी न्यूनतम साझा कार्यक्रम का अभाव था।
- जनता सरकार ने इंदिरा गांधी की सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों में कोई बुनियादी बदलाव प्रस्तुत नहीं किया।
- मोरारजी देसाई के नेतृत्व वाली जनता सरकार ने 18 माह में ही अपना बहुमत खो दिया।
- कांग्रेस के समर्थन से चरण सिंह के नेतृत्व में दूसरी सरकार बनी।
- चरण सिंह के नेतृत्व वाली सरकार मात्र 4 महीने ही सत्ता में रही।
- 1980 में हुए लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने 353 सीटें प्राप्त कर सरकार गठित की।
- 1980 के चुनाव में जनता ने यह संदेश दिया कि सरकार अगर अस्थिर और कलहपूर्ण हो तो मतदाता उसे सत्ता से बेदखल कर देते हैं।

© JCERT not to be republished

राजनीतिक विरासत:-

आपातकाल की राजनीतिक विरासत

- इस दौर में कांग्रेस पार्टी एक नेता इंदिरा गांधी की लोकप्रियता पर निर्भर हुई।
- अन्य विपक्षी दल गैर-कांग्रेसवाद की राजनीति की तरफ एकजुट हुए।
- विपक्षी दल की एकता ने 1977 के चुनाव में जीत हासिल कर एक नई मिसाल प्रस्तुत की ।
- 1977 के चुनाव से भारतीय राजनीति में पिछड़ी जाति के प्रभाव में वृद्धि हुई।
- जनता पार्टी की सरकार ने मंडल आयोग का गठन किया।
- आपातकाल के दौर में संवैधानिक संकट की स्थिति उत्पन्न हुई। इस दौर में संसद और न्यायपालिका के बीच तनाव उत्पन्न हुआ।
- सरकार के पास पूर्ण बहुमत होने के बावजूद लोकतांत्रिक अधिकारों को प्रतिबंधित किया गया।
- आपातकाल के दौरान सरकार ने प्राप्त शक्तियों का दुरुपयोग भी किया।

- इस दौर में राजनीतिक संस्था आधारित लोकतंत्र और जनभागीदारी आधारित लोकतंत्र में तनाव उपस्थित हुआ।
- राजनीतिक दल जब जनता की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं तो ऐसे जन आंदोलनों की उत्पत्ति होती है।

आपातकाल के दौर के प्रमुख विपक्षी नेताओं का संक्षिप्त जीवन परिचयः-

चारु मजूमदार

- चारू मजूमदार कम्युनिस्ट क्रांतिकारी और नक्सलवादी आंदोलन के नेता थे।
- इन्होंने तेभागा आंदोलन में भागीदारी प्रस्तुत की थी।
- चारु मजूमदार ने सीपीआई छोड़कर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी - लेनिनवादी) की स्थापना की।
- पश्चिम बंगाल के पर्वतीय जिले दार्जिलिंग के नक्सलबाड़ी पुलिस थाना क्षेत्र में 1967 में नक्सलवादी आंदोलन शुरू हुआ।
- चारू मजूमदार माओवादी पंथ में विश्वास करते थे और क्रांतिकारी हिंसा के समर्थक थे।
- कांग्रेस शासित पश्चिम बंगाल में नक्सलवादी विद्रोह को कुचलने का प्रयास किया गया परंतु वर्तमान में 9 राज्यों के 75 जिले इससे प्रभावित हैं।
- नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आदिवासियों की जनसंख्या ज्यादा है।
- चारु मजूमदार की पुलिस हिरासत में मौत हो गई।
- सरकार और नक्सलियों के संघर्ष में कई लोगों ने अपनी जाने गवाई हैं।
- जरूरत है इन क्षेत्रों में मौजूद समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने की, साथ ही इस अतिवादी हिंसक आंदोलन को खत्म करने की।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण (1902-1979)

- जयप्रकाश नारायण युवावस्था में मार्क्सवादी थे।
- इन्होंने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की।
- जयप्रकाश नारायण ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- जयप्रकाश नारायण ने नेहरू मंत्रिमंडल में शामिल होने से इंकार कर दिया और 1955 के बाद सक्रिय राजनीति छोड़कर भूदान आंदोलन में सक्रिय हो गए।
- जयप्रकाश नारायण ने नागा विद्रोहियों से बातचीत की, कश्मीर में शांति प्रयास किए तथा चंबल के डकैतों से आत्मसमर्पण करवाया।
- जयप्रकाश नारायण ने आपातकाल के दौरान सरकार के विरुद्ध आंदोलन का नेतृत्व किया।
- जयप्रकाश नारायण जनता पार्टी के गठन के प्रेरणा -स्रोत थे।
- जयप्रकाश नारायण ने आपातकाल के दौरान संपूर्ण क्रांति का नारा दिया था।

मोरारजी देसाई (1896-1995)

- मोरारजी देसाई स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी नेता थे।

© JCERT not to be republished

- मोरारजी देसाई प्राकृतिक चिकित्सा और निग्रह के प्रतिपादक थे।
- मोरारजी देसाई 1967 से 69 के बीच भारत के उप प्रधानमंत्री बने।
- कांग्रेस पार्टी में टूट के पश्चात मोरारजी देसाई कांग्रेस (ओ) में शामिल हो गए।
- 1977 में मोरारजी देसाई जनता पार्टी की सरकार में भारत के प्रधानमंत्री बने।

चौधरी चरण सिंह (1902-1987)

- चौधरी चरण सिंह एक स्वतंत्रता सेनानी थे।
- चौधरी चरण सिंह ने 1967 में भारतीय क्रांति दल का गठन किया।
- चौधरी चरण सिंह उत्तर प्रदेश में दो बार मुख्यमंत्री रहे।
- चौधरी चरण सिंह ने लोक दल की स्थापना की।
- जनता पार्टी की सरकार में चौधरी चरण सिंह उप -प्रधानमंत्री और गृह मंत्री रहे।
- जनता पार्टी की सरकार ने जब बहुमत खो दिया तो कांग्रेस के समर्थन से चौधरी चरण सिंह भारत के प्रधानमंत्री बने।
- चार महीनों के पश्चात चौधरी चरण सिंह की सरकार ने बहुमत खो दिया।

जगजीवन राम (1908-1986)

- जगजीवन राम स्वतंत्रता सेनानी एवं बिहार के कांग्रेसी नेता थे।।
- जगजीवन राम 1977 -79 के बीच भारत के उप प्रधानमंत्री रहे।
- जगजीवन राम संविधान सभा के सदस्य भी थे।
- जगजीवन राम 1952 -1986 तक सांसद रहे।
- जगजीवन राम स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में श्रम मंत्री थे।

कहा जा सकता है कि आपातकाल के सकारात्मक एवं नकारात्मक -दोनों परिणाम प्रस्तुत हुए। इस दौरान लोकतांत्रिक अधिकारों को प्रतिबंधित किया गया, वही जनता आंदोलनों के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति अधिक सक्रिय हुई। आपातकाल के दौरान जनता ने अधिक कठिनाइयाँ महसूस कीं,परंतु भारत में लोकतंत्र अंततः मजबूत हुआ।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. गरीबी हटाओ का नारा किसने दिया था?
   a. जयप्रकाश नारायण
   b. मोरारजी देसाई
   c. इंदिरा गांधी
   d. चौधरी चरण सिंह
2. आपातकाल की घोषणा कब की गई?
   a. 25 जून 1974
   b. 25 जून1975
   c. 25 जून 1976
   d. 25 जून 1976
3. राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा संविधान के किस अनुच्छेद के तहत की जाती है?
   a. अनुच्छेद 356
   b. अनुच्छेद 355

© JCERT not to be republished

c. अनुच्छेद 365

d. अनुच्छेद 352

4. 1977 के चुनावों में विजय के पश्चात् जनता पार्टी की सरकार के प्रधानमंत्री कौन बने?

a. मोरारजी देसाई

b. चौधरी चरण सिंह

c. जयप्रकाश नारायण

d. जगजीवन राम

5. आपातकाल पर जांच हेतु गठित शाह जांच आयोग का गठन कब किया गया?

a. 1978

b. 1977

c. 1976

d. 1980

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. राष्ट्रीय आपातकाल से क्या समझते हैं?

2. सरकार ने किन तर्कों के आधार पर आपातकाल लगाया?

3. आपातकाल के पश्चात जनता पार्टी के नेतृत्व में गठित सरकार ने अपना बहुमत कार्यकाल से पूर्व क्यों खो दिया?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. आपातकाल लागू किए जाने के पक्ष एवं विपक्ष में दिए गए तर्कों का मूल्यांकन करें।

2. आपातकाल के दौर में विपक्षी दलों द्वारा हुए जन आंदोलन में जयप्रकाश नारायण की भूमिका का विश्लेषण करें।

© JCERT not to be republished